जैव रसायन विभाग द्वारा स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान का जैव रसायन विभाग अपने स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर ''एक स्वास्थ्य के लिए मल्टीओमिक्सः जैव चिकित्सा अनुसंधान में चुनौतियां एवं संभावनाएं'' विषय पर दो दिवसीय एस.वी.बी.बी.आई के सप्तम वार्षिक सम्मेलन एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आज मुख्य अतिथि डा. धीर सिंह, निदेशक एवं कुलपति राष्ट्रीय डेयरी संस्थान करनाल एवं संस्थान के निदेशक डा. त्रिवेणी दत्त द्वारा किया गया।

अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि एवं निदेशक राष्ट्रीय डेयरी संस्थान करनाल ने आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि यह विषय बहुत ही महीन एवं महत्वपूर्ण है जिनके उचित समझ व उपयोग से पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन में अभूतपूर्व सुधार किया जा सकता है।

डा. सिंह ने अमेरिका के मानव जीनोम परियोजना का उदाहरण देते हुए कहा कि अभी तक पशु जीनोम के अध्यन्न व अनुसंधान पर ज्यादा बल नहीं दिया गया और अभी भी पशु जीनोम की जटिलता और विभिन्नताओं पर शोध होना बाकी है। उन्होंने वैज्ञानिकों और अनुसंधानकर्ताओं को किसान उपयोगी परियोजनायें एवं अनुसंधान चलाने पर बल दिया जिससे हमारे किसानों की आय और उनके पशुओं के स्वास्थ्य में वृद्धि हो।

संस्थान के निदेशक एवं कुलपति डा. त्रिवेणी दत्त ने संस्थान के जैव रसायन विभाग की स्थापना के स्वर्ण जंयती समारोह के अवसर पर सभी पूर्व एवं वर्तमान वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं को बधाई दी। उन्होंने विभाग की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह विभाग संस्थान के अनुसंधान और शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंनें संस्थान में आधारतभूत विज्ञान महाविद्यालय की संकल्पना पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह संस्थान

देश का अग्रणी संस्थान है जो पिछले 133 वर्षों से पशु रोग अनुसंधान, निदान तथा पशु रोगों के टीके विकसित कर बीमारियों का उन्मूलन कर रहा जिसमें डोरीन, रिंडरपेस्ट सीबीपीपी अफ्रीकन हॉर्स सिकनेस शामिल है। इस संस्थान ने पशुओं के रोग उन्मूलन के निरंतर प्रयास के साथ-साथ पशुधन और कुक्कुट को प्रभावित करने वाले विभिन्न रोगों की बीमारियों के लिए गुणवत्तापूर्ण टीकों का विकास किया है।

भारतीय जैव रसायज्ञ एवं जैव प्रौद्योगिकीविद् समाज के अध्यक्ष डा. बी.पी. मोहंती ने इस संगठन के इतिहास व कार्यों का उल्लेख किया जबकि इसी समाज के सचिव डा. शुभाशीष बटाब्या ल ने देश के विभिन्न पशु चिकित्सा महाविद्यालयों में अलग से जैव रसायन विभाग के गठन पर जोर दिया जो कि सभी अन्य पशुचिकित्सा विषयों को आधारभूत जानकारियों मुहैया कराता है।

इससे पूर्व इस कार्यक्रम के आयोजन सचिव डा. मनीष महावर प्रधान वैज्ञानिक जैव रसायन विभाग ने उपस्थित सभी गणमान्य लोगों का स्वागत किया एवं संगोष्ठी के बारे में संक्षिप्त जानकारियाँ दी। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर दो स्वर्ण जयंती व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

प्रथम व्याख्यान अमेरिका से आये प्रो. विनीत के. सिंह द्वारा "स्टेफाइलोकोकस आरियस जीवाणु के झिल्ली में उपस्थित वसीय अम्ल का फिजियोलाजी और इसके चिकित्सा महत्व" पर प्रकाश डाला।

द्वितीय व्याख्यान अमेरिका के ही प्रो. योगेश सैनी द्वारा "मल्टीओमिक्स के माध्यम से पर्यावरण सम्बन्धी फेफड़े की बीमारियों के आण्विक पाथवे की पहचान" पर दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन भैषज्य एवं विष विज्ञान के डा. अनीसा वी.ए. द्वारा किया गया जबकि धन्यवाद ज्ञापन जैव रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. राघवेन्द्र सिंह द्वारा दिया गया। इस अवसर पर सभी संयुक्त निदेशक, अनेक विभागों के विभागाध्यक्ष, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्ता, छात्र एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे।